अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "आ़शिक़ाने रसूल की 130 हि़कायात मअ़ मक्के मदीने की ज़ियारतें" से लिये गए मवाद की पांचवीं क़िस्त़

Haajiyon Ke Waaqiaat (Hindi)

हा़जियों के वाकि़आ़त

कुल सफ़ह़ात 17

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (اَلْمُسْتَطْرَف ج١ ص٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ह़ाजियों के वाक़िआ़त

येह रिसाला (**ह़ाजियों के वाक़िआ़त**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है । इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेइल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की
मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • Email : hind.printing92@gmail.com

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

येह मज़्मून ''आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात'' के सफ़ह़ा 68 ता 84 से लिया गया है।

ह़ाजियों के 10 वाक़िआ़त

दुआ़ए अ़त्तार

या रब्बल आ़लमीन ! जो कोई रिसाला ''**ह़ाजियों के वाक़िआ़त**'' के 16 सफ़ह़ात पढ़ या सुन ले, उस को बार बार ह़ज व ज़ियारते मदीना से मुशर्रफ़ फ़रमा।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शहनशाहे अनाम عَلَیْہِ السَّلَام का सलाम अपने एक ग़ुलाम के नाम

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल फ़ज़्ल इब्ने ज़ीरक कूमसानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی फ़रमाते हैं : मेरे पास ख़ुरासान से एक आ़शिक़े रसूल आया और कहने लगा : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में सोया हुवा था कि जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ पर ख़्वाब में करम फ़रमाया : लबहाए मुबारका वा हुए, रह़मत के फूल झड़ने लगे और अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : जब तू हमज़ान जाए तो अबुल फ़ज़्ल इब्ने ज़ीरक को मेरा सलाम कहना। मैं अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! उन पर इस करम की वजह ? फ़रमाया : ''वोह

www.dawateislami.net

रोज़ाना 100 बार मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है।'' सय्यिदुना अबुल फ़ज़्ल رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : फिर वोह ख़ुरासानी (मुझ से) कहने लगा : मुझे भी वोह दुरूदे पाक बता दीजिये (जिस का आप विर्द करते हैं) तो मैं ने उसे बताया कि मैं रोज़ाना 100 या इस से ज़ियादा मरतबा येह दुरूदे पाक पढ़ता हूं :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ جَزَى اللّٰهُ مُحَمَّدًا عَنَّا مَاهُوَ اَهْلُهٗ

उस आ़शिक़े रसूल ने येह दुरूदे पाक मुझ से सीख लिया और क़सम खा कर कहने लगा : मैं आप को जानता था न आप का कभी नाम सुना था, आप के बारे में मुझे नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ही बताया। ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल फ़ज़्ल इब्ने ज़ीरक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मैं ने उस ख़ुश नसीब आ़शिक़े रसूल को तोह़्फ़ा पेश किया ताकि अपने प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के बारे में कुछ मज़ीद उस से सुनूं, लेकिन क़बूल करने से इन्कार करते हुए वोह बोला : मैं सुल्त़ाने अम्बियाए किराम, रसूले ज़ी एह़तिराम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का मुबारक पैग़ाम पहुंचाने का कोई दुन्यवी बदला नहीं चाहता। इस के बा'द उस आ़शिक़े रसूल को मैं ने दोबारा कभी नहीं देखा। (تاریخ الاسلام للذھبی ج۳۲ ص۶۳)

﴾1﴿ वालिदे मर्ह़ूम पर जंगल में करम बालाए करम

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ''मैं ने दौराने त़वाफ़ एक आ़शिक़े रसूल को हर क़दम पर हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर **दुरूदे पाक** पढ़ते हुए देखा तो पूछा : ''भाई ! ''لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه'', ''سُبْحٰنَ اللّٰه'' के बजाए सिर्फ़ दुरूदे पाक पढ़े जाने में क्या राज़ है ?''

तो उस ने मेरा नाम दर्याफ़्त किया, फिर कहा : मैं अपने वालिदे गिरामी के साथ **हज्जे बैतुल्लाह** के लिये चला, अस्नाए सफ़र (या'नी सफ़र के दौरान) वालिदे बुज़ुर्गवार शदीद बीमार हो गए, हम एक मक़ाम पर ठहर गए। इलाज मुआ़लजा किया मगर क़ज़ाए इलाही से वोह वफ़ात पा गए, यकायक उन का चेहरा सियाह और आंखें तिरछी हो गईं और पेट भी फूल गया। येह देख कर मैं घबरा गया और रोते हुए पढ़ा : "اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ" [1] मैं ने मर्हूम के चेहरे पर चादर उढ़ा दी। इसी परेशानी के आ़लम में मुझे नींद ने आ घेरा, मैं ने ख़्वाब में इन्तिहाई साफ़ सुथरे लिबास में मल्बूस एक हुस्नो जमाल के पैकर मुअ़त्तर मुअ़त्तर बुज़ुर्ग की ज़ियारत की, ऐसा साहिबे हुस्नो जमाल मेरी आंख ने कभी नहीं देखा था और ऐसी ख़ुश्बू भी मैं ने कभी नहीं सूंघी थी, वोह मेरे वालिदे मर्हूम के क़रीब तशरीफ़ ले आए, चादर हटाई और अपना नूरानी हाथ उन के चेहरे पर फैरा। देखते ही देखते मर्हूम के चेहरे की सियाही नूर में तब्दील हो गई, आंखें और पेट भी दुरुस्त हो गए, जब वोह नूरानी बुज़ुर्ग वापस जाने के लिये पलटे तो मैं उन के दामन से लिपट गया और अ़र्ज़ की : "आप कौन हैं ? जिन के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरे वालिदे मर्हूम पर इस वीराने में येह एह़सान फ़रमाया है।" फ़रमाया : "क्या तुम मुझे नहीं पहचानते ?" **मैं साहिबे कुरआन मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह** (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) हूं, तुम्हारे वालिद गुनहगार थे लेकिन मुझ पर **कसरत से दुरूदे**

---

1 : ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *हम **अल्लाह** के माल हैं और हम को उसी की त़रफ़ फिरना है।* (پ۲،البقرۃ:۱۵٦)

पाक भेजते थे, जब येह इस तकलीफ़ में मुब्तला हुए तो मुझ से फ़रियाद की थी और बेशक **जो मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ता है मैं उस की फ़रियाद रसी करता हूं ।''** फिर मेरी आंख खुल गई, मैं ने देखा कि ह़क़ीक़त में भी मेरे वालिदे मर्हूम के **चेहरे पर नूर** फैला हुवा था और पेट भी अपनी अस्ली ह़ालत पर आ चुका था । (مُلَخَّص از تفسیرِ رُوحُ البیان ج۷ ص۲۲۵)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो ।*

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

दुन्या व आख़िरत में जब मैं रहूं सलामत
प्यारे पढ़ूं न क्यूंकर तुम पर सलाम हर दम
लिल्लाह अब हमारी फ़रियाद को पहुंचिये !
बेह़द है ह़ाल अबतर तुम पर सलाम हर दम (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾2﴿ अपने आक़ा से पहले त़वाफ़ नहीं करूंगा

मह़बूबे रब्बे ग़नी, आक़ाए मक्की मदनी صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने **सुल्ह़े हुदैबिया** के मौक़अ़ पर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़समाने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को अपना सफ़ीर बना कर मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا भेजा कि कुफ़्फ़ार से मुज़ाकरात करें क्यूंकि उन लोगों ने येह तै किया था कि इस साल शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم को मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में दाख़िल नहीं होने देंगे । ह़ज़रते सय्यिदुना उ़समाने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ **ह़रमे**

का'बा पहुंचे तो उन्हें बताया गया कि इस साल आप लोग **उ़मरह** नहीं कर सकते। कुफ़्फ़ारे मक्का ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़समाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कहा : चूंकि आप यहां आ गए हैं, इस लिये चाहें तो **त़वाफ़** कर लीजिये। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़समाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के प्यारे नबी मक्की मदनी صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बिग़ैर **त़वाफ़** करना गवारा न हुवा लिहाज़ा फ़रमाया : "مَاكُنْتُ لِاَفْعَلَ حَتّٰى يَطُوْفَ بِهٖ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم" या'नी मैं उस वक़्त तक त़वाफ़े का'बा नहीं करूंगा जब तक रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم त़वाफ़ न कर लें।" (مسند امام احمد بن حنبل ج٦ ص٤٨٩ حديث١٨٩٣٢)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

अल्लाह से क्या प्यार है उ़समाने ग़नी का
मह़बूबे ख़ुदा यार है उ़समाने ग़नी का (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

﴿3﴾ 20 पैदल सफ़रे ह़ज

राकिबे दोशे मुस्त़फ़ा, सय्यिदुल अस्ख़िया, बरादरे शहीदे करबला, जिगर गोशए फ़ात़िमा, दिलबन्दे मुर्तज़ा, सय्यिदुना इमामे **ह़सन** मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक मरतबा फ़रमाया : मैं बहुत शर्मिन्दा हूं, आह ! **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से किस त़रह़ मुलाक़ात करूंगा ! अफ़्सोस ! उस के पाक घर (या'नी का'बए मुशर्रफ़ा) तक कभी पैदल चल कर नहीं आया। इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ 20 बार मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا से मक्कए मुकर्रमा

www.dawateislami.net

زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا **हज** के लिये पैदल आए। मन्क़ूल है : एक मरतबा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने **ख़ानए का'बा** का त़वाफ़ किया फिर **मक़ामे इब्राहीम** पर दो रक्अ़त नमाज़ वाजिबुत्त़वाफ़ अदा की फिर अपना रुख़्सारे मुबारक मक़ामे इब्राहीम पर रख दिया और ज़ारो क़ित़ार रोते हुए इस त़रह़ मुनाजात की : "ऐ मेरे रब्बे क़दीर عَزَّوَجَلَّ ! तेरा ह़क़ीर बन्दा तेरे दरवाज़े पर ह़ाज़िर है, तेरा भिकारी तेरे दरवाज़े पर ह़ाज़िर है, तेरा मिस्कीन बन्दा तेरे दरवाज़े पर ह़ाज़िर है," इन्हीं अल्फ़ाज़ को बार बार दोहराते और **रोते** रहे। इस के बा'द मस्जिदुल ह़राम से बाहर तशरीफ़ लाए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का गुज़र चन्द मिस्कीनों के पास से हुवा जो बैठे (सदक़े की) रोटियों के टुकड़े खा रहे थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने उन को सलाम किया, जवाबे सलाम के बा'द उन्हों ने खाने की दा'वत दी, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ बिला तकल्लुफ़ उन के दस्तरख़्वान पर बैठ गए और फ़रमाया : अगर येह रोटियों के टुकड़े सदक़े के न होते तो आप ह़ज़रात के साथ खाने में ज़रूर शिर्कत करता, मगर हम आले रसूल के लिये सदक़ा ह़राम है। इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ उन मिस्कीनों को अपनी क़ियाम गाह पर साथ ले आए और सब को उ़म्दा खाना खिलाया, फिर रुख़्सत होते वक़्त सब को **दिरहम** भी इनायत फ़रमाए। (المستطرف ج ۱ ص ۲۳)

अल्लाह *عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।*

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

वोह ह़सन मुज्तबा सय्यिदुल अस्ख़िया

राकिबे दौशे इ़ज़्ज़त पे लाखों सलाम

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

﴾4﴿ आक़ा के साथ बारिश में त़वाफ़ की सआ़दत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बारिश में त़वाफ़ की भी क्या बात है ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इ़क़ाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना **अनस** बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ मैं ने **बारिश में त़वाफ़** की सआ़दत ह़ासिल की, जब ''मक़ामे इब्राहीम'' पर हम दो रक्अ़त अदा कर चुके तो ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : नए सिरे से अ़मल करो बेशक तुम्हारे गुनाह बख़्श दिये गए हैं, **सरकारे मदीना** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हम से इसी त़रह़ फ़रमाया और हम ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ **बारिश में त़वाफ़ का शरफ़ ह़ासिल किया ।**

(ابنِ ماجه ص٥٢٤ ج٣ حديث٣١١٨)

आज है रू बरू मेरे का'बा — सिलसिला है त़वाफ़ का या रब्ब

अब्र बरसा दे नूर का कि लूं — बारिशे नूर में नहा या रब्ब

(वसाइले बख़्शिश, स. 87)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

www.dawateislami.net

﴾5﴿ मुझे ह़रम शरीफ़ में ले चलो

ह़ज़रते मौलाना अ़ब्दुल ह़क़ इलाह आबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى हिन्द के बाशिन्दे और जलीलुल क़द्र आ़लिमे दीन थे, चालीस साल से ज़ाइद मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में क़ियाम पज़ीर रहे। इल्तिज़ामन (ज़रूर) हर साल **ह़ज** करते। एक साल ज़मानए **ह़ज** में आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه बहुत अ़लील और साह़िबे फ़िराश (या'नी बीमार हो कर बिस्तर पर पड़े) थे, (ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम की) नवीं तारीख़ अपने तलामिज़ा (या'नी शागिर्दों) से कहा : "मुझे ह़रम शरीफ़ में ले चलो !" कई आदमी उठा कर लाए, का'बए मुअ़ज़्ज़मा के सामने बिठाया, **ज़म ज़म शरीफ़** मंगा कर पिया और दुआ़ की, कि "इलाही (عَزَّ وَجَلَّ) **ह़ज** से मह़रूम न रख।" उसी वक़्त मौला तआ़ला ने ऐसी **क़ुव्वत** अ़त़ा फ़रमाई कि उठ कर अपने पाऊं से अ़रफ़ात शरीफ़ गए और **ह़ज** अदा किया।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, ह़िस्सा. 2, स. 198 मुलख़्ख़सन)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर यक़ीने मोह़कम हो तो बेशक आबे ज़म ज़म पीने के बा'द जो दुआ़ मांगी जाए क़बूल होती है और क्यूं न हो कि फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم है : "ज़म ज़म जिस मुराद के लिये पिया जाए उसी के लिये है।"

(ابن ماجه ج٣ص ٤٩٠ حديث ٣٠٦٢)

येह ज़म ज़म उस लिये है जिस लिये इस को पिये कोई
इसी ज़म ज़म में जन्नत है इसी ज़म ज़म में कौसर है

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

《6》 हल्क़ में सूई चुभने का ज़म ज़म से इलाज हो गया

हम्ज़ा बिन वासिल अपने वालिदे गिरामी से नक़्ल करते हैं : ह़रमे मोह़तरम में एक आदमी ने सत्तू खाए, उस में **सूई** थी जो कि ह़ल्क़ में चुभ गई और उस की जान पर बन गई, लाख जतन करने के बा वुजूद आराम न हुवा, उस ने कराहते हुए कहा : मेरा आख़िरी इलाज **ज़म ज़म** है मुझे **आबे ज़म ज़म** पिलाओ اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ मैं ठीक हो जाऊंगा । चुनान्चे उसे **आबे ज़म ज़म** पिलाया गया । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **आबे ज़म ज़म शरीफ़ की बरकत से उसे सिह्ह़त मिल गई ।** रावी कहते हैं : मेरे वालिद साह़िब ने उस आदमी को कई दिन बा'द ह़रम शरीफ़ में देखा कि वोह पुर सुकून और मुकम्मल सिह्ह़तयाब है । (شفاء الغرام ج۱ ص ۳۳۸)

मैं मक्के में जा कर करूंगा त़वाफ़ और
*नसीब आबे **ज़म ज़म** मुझे होगा पीना*

(वसाइले बख़्शिश, स. 323)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی محمَّد

《7》 प्यास का बीमार और आबे ज़म ज़म की बहार

एक यमनी जो कि इस्तिस्क़ा (اِس۔تِس۔قا)(या'नी पेट बढ़ जाने और शदीद प्यास लगने) के मरज़ में मुब्तला था, यमन के त़बीबों ने उसे ला इलाज क़रार दे दिया था मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا हाज़िर हुवा, यहां के त़बीबों ने भी मा'ज़िरत कर ली । **अल्लाह** तआ़ला ने उस के दिल में डाला कि वोह **आबे ज़म ज़म** पिये चुनान्चे **उस ने ख़ूब पेट भर कर आबे ज़म ज़म** पिया और **रब्बुल अरबाब** عَزَّوَجَلَّ **के फ़ज़्लो करम से शिफ़ायाब हो गया ।** (ऐज़न स. 255)

तू मक्के की गलियां दिखा या इलाही
*वहां ख़ूब **ज़म ज़म** पिला या इलाही*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾8﴿ अ़ताओं का कुंवां सज़ाओं का कुंवां

मुजाहिद बिन यह़्या बल्ख़ी फ़रमाते हैं : एक ख़ुरासानी 60 साल से मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में रहता था जो कि बड़ा आ़बिदो ज़ाहिद शब ज़िन्दादार शख़्स था, दिन को कुरआने करीम पढ़ता, सारी रात त़वाफ़ करता। एक नेक और सालेह़ आदमी और उस ख़ुरासानी के दरमियान दोस्ती थी। उस सालेह़ मर्द ने अपने ख़ुरासानी दोस्त को दस हज़ार दीनार बत़ौरे अमानत दिये और सफ़र पर चला गया। जब सफ़र से लौटा तो पता चला उस का ख़ुरासानी दोस्त फ़ौत हो चुका है, येह उस के वारिसों के पास गया और अपनी अमानत मांगी, उन्हों ने ला इ़ल्मी का इज़्हार किया। उस सालेह़ शख़्स ने फ़ुक़हाए मक्कए मुकर्रमा से इस वाक़िए का ज़िक्र किया, उन्हों ने फ़रमाया : हमें उम्मीद है मर्हूम ख़ुरासानी जन्नती होगा, तुम आधी रात के बाद **बिअरे ज़म ज़म** के अन्दर झांक कर इस त़रह़ आवाज़ देना : "ऐ ख़ुरासानी ! मैं ने तुम्हें अमानत दी थी।" वोह जवाब दे देगा। उस ने ऐसा ही किया मगर **ज़म ज़म के कुंवें** से जवाब न आया। उस ने फिर उ़लमाए मक्कए मुकर्रमा से राबित़ा किया, उन्हों ने इज़्हारे अफ़्सोस करते हुए कहा : शायद वोह जन्नतियों में से नहीं वरना उस की रूह़ बिअरे ज़म ज़म में होती, अब तुम **यमन** में बिअरे बरहूत पर जा

www.dawateislami.net

कर इसी त़रह़ बुलाओ। वोह कुंवां जहन्नम के कनारे पर है वहां जहन्नमियों की रूहें होती हैं। चुनान्चे येह यमन पहुंचा और बिअरे बरहूत में झांक कर आवाज़ दी : "ऐ ख़ुरासानी ! मैं ने तुम्हें अमानत दी थी।" वहां रूहों को चीख़ते सुना, एक से पूछा : तू क्यूं अ़ज़ाब में मुब्तला है ? उस ने कहा : "मैं ज़ालिम था ह़राम खाता था मलकुल मौत ने मुझे यहां फैंक दिया है।" दूसरी रूह़ बोली : "मैं अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान की रूह़ हूं, ज़ुल्म की वजह से यहां अ़ज़ाब में हूं।" उस मर्दे सालेह़ का बयान है : मैं ने तीसरी आवाज़ सुनी जो कि मर्हूम ख़ुरासानी दोस्त की थी, मैं ने पूछा : तुम यहां कैसे ? तुम तो आ़बिदो ज़ाहिद थे ! ख़ुरासानी ने कहा : "मेरी एक मा'ज़ूर बहन थी जिस से मैं ने ला परवाही और क़त़्ए़ रेह़मी की (या'नी रिश्ता तोड़ा) जिस की वजह से सारी इ़बादत तबाह हो गई और मुब्तलाए अ़ज़ाब हूं।" उस ने पूछा : मेरी अमानत कहां है ? ख़ुरासानी ने कहा : "मेरे मकान के फ़ुलां कोने में मदफ़ून है जा कर निकाल लो।" चुनान्चे येह मर्दे सालेह़ **मर्हूम ख़ुरासानी** के मकान पर गया, वहां से अपनी रक़म निकाली और फिर उस की **बहन** के पास पहुंचा, उस की ज़रूरियात पूरी कीं, वोह ख़ुश हो गई। मर्दे सालेह़ ने मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا ह़ाज़िर हो कर **बिअरे ज़म ज़म** में झांक कर आवाज़ दी, मर्हूम ख़ुरासानी ने जवाब दिया : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **बिरे बरहूत** से नजात मिल गई है और अब **बिअरे ज़म ज़म** में **अम्नो** चैन से हूं।

(بلد الامين ص ۹۸، ۹۹)

www.dawateislami.net

या इलाही ! रिश्तेदारों से करूं हुस्ने सुलूक

क़त्ए रेहूमी से बचूं इस में करूं न भूलचूक

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾9﴿ हिन्द से यकायक का'बे के रू ब रू

हिन्द में मौजूद एक घास काटने वाले बूढ़े साहिब को 9 जुल हिज्जतुल ह़राम के रोज़ ख़याल आया कि आज यौमे अ़रफ़ा है, ख़ुश नसीब हुज्जाजे किराम मैदाने अ़रफ़ात में जम्अ़ होंगे येह ख़याल आते ही बूढ़े साहिब ने एक आहे सर्द दिले पुर दर्द से खींच कर निहायत ह़सरत से कहा : ऐ काश ! मैं भी **ह़ज** से मुशर्रफ़ हुवा होता । **कुदवतुल कुब्रा**, महबूबे यज़्दानी, ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ सय्यिद अशरफ़ जहांगीर समनानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورَانِی क़रीब ही तशरीफ़ फ़रमा थे, आप ने उस की ह़सरत भरी आवाज़ सुनी तो फ़रमाया : "इधर आइये !" बूढ़े साहिब क़रीब आए, अब ज़बान से नहीं सिर्फ़ दस्ते मुबारक के इशारे से फ़रमाया : "जाइये !" इशारा होते ही उस बूढ़े साहिब ने हाथोंहाथ अपने आप को मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا की मस्जिदुल ह़राम में ऐन का'बे के सामने खड़ा पाया ! उन्हों ने झूम झूम कर त़वाफ़ किया, अ़रफ़ात पहुंचे और दीगर मनासिके ह़ज अदा किये । जब अय्यामे ह़ज पूरे हो गए तो बूढ़े ह़ाजी साहिब के दिल में ख़याल आया कि अब अपने वत़न किस त़रह़ पहुंचूंगा ! इस ख़याल का आना था कि उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ जहांगीर समनानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورَانِی को अपने सामने खड़ा पाया, फ़रमाने लगे : "जाइये !" बूढ़े ह़ाजी

www.dawateislami.net

साहि़ब ने जूंही सर उठाया तो हिन्द में अपने घर के अन्दर थे।

(लताइफ़े अशरफ़ी हि़स्सा. 3, स. 602-603 बित्तसर्रुफ़)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी बे हि़साब मग़फ़िरत हो।*

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلَّم

क्यूंकर न मेरे काम बनें ग़ैब से ह़सन

बन्दा भी हूं तो कैसे बड़े कारसाज़ का (ज़ौके़ ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾10﴿ अनोखा कोढ़ी

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल हु़सैन दर्राज عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَھَّاب फ़रमाते हैं : एक साल मैं अकेला **ह़ज** पर रवाना हुवा और तेज़ी से मन्ज़िलें तै़ करता हुवा "**क़ादिसिय्या**" जा पहुंचा। वहां किसी मस्जिद में गया तो मेरी नज़र एक मज्ज़ूम या'नी कोढ़ी शख़्स पर पड़ी। उस ने मुझे सलाम किया और कहा : "ऐ अबल हु़सैन ! क्या **ह़ज** का इरादा है ?" उसे देख कर मुझे बहुत ज़ियादा कराहत (या'नी घिन) मह़सूस हो रही थी लिहाज़ा मैं ने बड़ी बे रुख़ी से कहा : "हां।" वोह कहने लगा : "फिर मुझे भी साथ ले चलिये।" मैं ने दिल में कहा : "येह एक नई मुसीबत आन पड़ी ! मैं तो तन्दुरुस्त लोगों की रफ़ाक़त (या'नी हमराही) से भी भागता हूं और एक **कोढ़ी** मुझे अपने साथ रखने की फ़रमाइश कर रहा है !" मैं ने साफ़ इन्कार कर दिया। वोह लजाजत से बोला : "आप की बड़ी मेहरबानी होगी, मुझे साथ ले लीजिये।" मगर मैं ने क़सम खा ली : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं हरगिज़ तुम्हें अपना रफ़ीक़ (साथी) न बनाऊंगा।"

www.dawateislami.net

उस ने कहा : "अबुल हुसैन ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **कमज़ोरों को ऐसा नवाज़ता है कि ताक़तवर भी हैरान रह जाते हैं !"** मैं ने कहा : "तुम ठीक कहते हो मगर मैं तुम्हें साथ नहीं रख सकता।" अ़स्र की नमाज़ पढ़ कर मैं ने दोबारा सफ़र शुरूअ़ किया और सुब्ह़ के वक़्त एक बस्ती में पहुंचा तो ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर उसी **कोढ़ी शख़्स** से मुलाक़ात हुई, उस ने मुझे देखते ही सलाम किया और बोला : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **कमज़ोरों को ऐसा नवाज़ता है कि त़ाक़तवर भी ह़ैरान रह जाते हैं !"** उस की येह बात सुन कर मुझे उस के बारे में अ़जीबो ग़रीब ख़यालात आने लगे। बहर ह़ाल मैं वहां से रवाना हुवा, जब मक़ामे "**क़र्आ़**" पहुंच कर नमाज़ पढ़ने मस्जिद में दाख़िल हुवा तो उसे भी वहां बैठे देखा, उस ने कहा : "ऐ अबल हुसैन ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **कमज़ोरों को ऐसा नवाज़ता है कि त़ाक़तवर भी ह़ैरान रह जाते हैं !"** येह सुन कर मुझ पर रिक़्क़त त़ारी हो गई और मैं ने बड़े अदब से अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! मैं **अल्लाहो ग़फ़्फ़ार** عَزَّوَجَلَّ से मुआ़फ़ी का त़लबगार हूं और आप से भी दरगुज़र का ख़्वास्तगार हूं, मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दीजिये।" फ़रमाने लगे : "येह आप कैसी बातें कर रहे हैं ?" मैं ने अ़र्ज़ की : मुझ से बहुत बड़ी ग़लत़ी हो गई कि आप के साथ सफ़र न किया, बराहे करम ! मुझे मुआ़फ़ी से नवाज़ते हुए शरीके सफ़र कर लीजिये। फ़रमाया : "आप मुझे साथ न रखने की क़सम खा चुके हैं और मैं आप की क़सम नहीं तुड़वाना चाहता।" मैं ने कहा : अच्छा ! फिर इतना करम फ़रमा दीजिये कि हर मन्ज़िल (पड़ाव) पर अपनी ज़ियारत की तरकीब फ़रमा दीजिये।

www.dawateislami.net

फ़रमाया : ''اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ'' फिर वोह मेरी निगाहों से ओझल हो गए और मैं भी आगे बढ़ गया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के उस नेक बन्दे की बरकत से बाक़ी सफ़र में मुझे भूको प्यास और थकावट का एह़सास तक न हुवा। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझे हर मन्ज़िल पर उस बुज़ुर्ग की ज़ियारत होती रही यहां तक कि मैं मदीनतुल मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا की मुश्कबार फ़ज़ाओं से फ़ैज़याब होने के बा'द **मक्कए मुअ़ज़्ज़मा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا पहुंच गया। वहां पर ह़ज़रते **सय्यिदुना अबू बक्र कत्तानी और ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन मुज़य्यिन** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا से मुलाक़ात का शरफ़ ह़ासिल हुवा। जब मैं ने उन्हें येह **ह़ैरत अंगेज़ वाक़िआ** सुनाया तो उन्हों ने फ़रमाया : ''अरे नादान ! जानते हो वोह कौन थे ? वोह **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जा'फ़र मज्ज़ूम** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَیُّوْم थे, हम तो दुआएं मांगते हैं कि काश **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें अपने इस **वली** का दीदार नसीब फ़रमाए। सुनो ! अब जब भी तुम्हारी उन से मुलाक़ात हो तो हमें ज़रूर बताना। दसवीं ज़ुल हिज्जतिल ह़राम को जब मैं ने **जम्रतुल अ़क़्बा** या'नी बड़े शैत़ान को रमी की (या'नी कंकरियां मारीं) तो किसी शख़्स ने मुझे अपनी त़रफ़ खींचा और कहा : ''ऐ अबुल हुसैन ! السلام علیکم '' जैसे ही मैं ने पीछे मुड़ कर देखा तो मेरे सामने वोही बुज़ुर्ग या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू जा'फ़र मज्ज़ूम** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَیُّوْم मौजूद थे। उन्हें देखते ही मुझ पर रिक़्क़त त़ारी हो गई और मैं रोते रोते बेसुध हो कर गिर पड़ा ! जब मेरे ह़वास बह़ाल हुए तो वोह तशरीफ़ ले जा चुके थे। फिर आख़िरी दिन त़वाफ़े रुख़्सत कर के ''मक़ामे इब्राहीम'' पर दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ने के बा'द मैं ने

www.dawateislami.net

जैसे ही दुआ़ के लिये हाथ उठाए अचानक किसी ने मुझे अपनी तरफ़ खींचा, देखा तो ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू जा'फ़र मज्ज़ूम** عَلَیۡهِ رَحۡمَۃُ اللّٰهِ الۡقَیُّوۡم थे, फ़रमाने लगे : "अबल हु़सैन ! घबराने या शोर मचाने की ज़रूरत नहीं ! बे फ़िक्र रहिये।" मैं ख़ामोश रहा और मैं ने बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में **तीन दुआ़एं** कीं, उन्हों ने मेरी हर दुआ़ पर "**आमीन**" कहा। इस के बा'द वोह मेरी नज़रों से ओझल हो गए और दोबारा नज़र नहीं आए। मेरी **तीन दुआ़एं** येह थीं, ﴾1﴿ ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! मेरे नज़्दीक "फ़क्र" ऐसा मह़बूब बना दे कि दुन्या में इस से ज़ियादा कोई शै मुझे प्यारी न हो ﴾2﴿ मुझे ऐसा न बनाना कि मेरी कोई रात इस ह़ालत में गुज़रे कि मैं ने सुब्ह़ के लिये कोई चीज़ ज़ख़ीरा कर के रखी हो। फिर ऐसा ही हुवा कई साल गुज़र गए लेकिन मैं ने कोई चीज़ अपने पास ज़ख़ीरा कर के न रखी और तीसरी दुआ़ येह थी : ﴾3﴿ ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! जब तू अपने औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام को अपने दीदार की दौलते उ़ज़्मा से मुशर्रफ़ फ़रमाए तो मुझे भी उन में शामिल फ़रमा लेना।" मुझे अपने रब्बे मजीद عَزَّوَجَلَّ से पूरी उम्मीद है कि मेरी इन दुआ़ओं को ज़रूर पूरा फ़रमाएगा क्यूंकि इन पर एक वलिय्ये कामिल ने "**आमीन**" की मुहर लगाई थी। (उ़यूनुल ह़िकायात, स. 291)

अल्लाह *عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।*

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

ज़ो'फ़ माना मगर येह ज़ालिम दिल
उन के रस्ते में तो थका न करे

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

ईमान की अ़लामत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:**
‘‘ईमान के सत्तर से ज़ाइद शो’बे (अ़लामात) हैं और ह़या ईमान का एक शो’बा है।’’

(مسلم، ص ۳۵، حدیث: ۱۵۲)

M.R.P. ₹ 00/-

DAWAT-E-ISLAMI

Maktabatul Madina

Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372
Faizane Madina, Teen Koniya Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200
421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi
011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025 *T&C Apply
feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net